हिन्दू और इसाई धर्म की स्वयं अवधारणाओं की तुलना

'खुद को खोने' की अवधारणा मसीह के शिक्षण में और हिन्दू शास्त्रों में भी हैं. बहरहाल इन अवधारणाओं की प्रकृति काफी अलग हैं. इस अनुच्छेद का उद्देश्य हैं की यह उन दोनों अवधारणाओं के बीच का अंतर की व्याख्या करे, और दर्शाए की कैसे एक शब्द का वास्तव में अलग अर्थ हो सकता हैं.

हिन्दू धर्म में स्वयं एक एकीकृत जीव हैं जिसमे सारी सृष्टि हिस्सा लेती हैं. यह स्वयं (आत्मन) अपने स्वभाव को जाना था और उसे मालूम था कि वह एक ब्रह्मण हैं, और स्वयं ही सब कुछ बन गया. हिन्दू धर्म का लक्ष्य हैं कि, एक व्यक्ति को यह महसूस कराये कि वासत्व में वह केवल जीव नहीं बरन उस महान स्वयं का भागी हैं. तो जो कहावत है, 'आत्मन (स्वयं, आत्मा) ही ब्रह्मण हैं'. योग और आध्यात्मिक व्यायाम के माध्यम से व्यक्ति को एहसास दिलाना और जानकारी देना कि वह एक ब्रह्म है. इस सन्दर्भ में स्वयं को खोने का विचार उस विश्वास के जानकारी तक लाता हैं जहाँ एक व्यक्ति खुद को सिर्फ एक व्यक्ति न समझे और न बोले और न ही अपनी वासना और चाहत के अनुसार कार्य करे. हिन्दू धर्म का लक्ष्य स्व इच्छाओं और चाहतो से अलगाव और दैविक शक्ति से एक हो जाना हैं.

यीश मसीह के शिक्षण में, 'स्व को खो देने' की अवधारण बहुत ही अलग हैं. यीशु ने एक व्यक्ति को सच्चे और वास्तविक प्राणी होंने की पुष्टि दी हैं. यह व्यक्ति न ही खोता हैं और न ही किसी महान स्व में बदलता हैं, बल्कि एक निश्चित अस्तित्व से सृजी हुई एक सृष्टि हैं. यीशु सिखाते हैं की एक इंसान एक व्यक्तित्व के रूप में अनंत काल तक परमेश्वर के साथ सम्बन्ध रखते (स्वर्ग) हुए जीता हैं या फिर परमेश्वर से अलगाव का जीवन (नरक) व्यतीत करता हैं. आदमी की समस्या गलती के ज्ञान में से एक का नहीं हैं. यीशु मसीह के अनुसार आदमी की समस्या परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह हैं. यह तब होता हैं जब एक अलग व्यक्तिगत प्राणी (आदमी), एक ऐसा जीवन व्यतीत करना चुनता हैं जिससे परमेश्वर को ना सम्मान मिलता हैं और ना ही उनकी पहचान होती हैं (एक उत्कृष्ट और स्वतंत्र प्राणी - इंसान से अलग). यीशु ने पाप और उस खतरे के खिलाफ बहुत मजबूत भाषा में चेतावनी दी जिसमे इंसान के विद्रोह के कारण नरक परेषित किया गया हैं. यीशु ने जो अवधारणा निस्वार्थता के बारे में सिखाया वह यह हैं की उन इच्छाओं को छोड़ना हैं जो परमेश्वर का विद्रोह करने वाली एक सच्ची और स्वतान्त्रिक स्व से उभरती हैं. यीश ने बताया की आदम और हव्वा (परमेश्वर के सृष्टि का पहला आदमी और पहली औरत) परमेश्वर से विद्रोह में या फिर पाप में गिरने के कारण से हुए अलगाव के समय से आदमी पाप में ही जिया हैं. यह पाप प्रत्येक मनुष्य के स्वभाव का एक हिस्सा है. "उसने सब से कहाँ, "यदि कोई

मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इनकार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाये हुए मेरे पीछे हो ले". (लूका ९:२३). इसका मतलब हैं की अपनी पापमय इच्छाओं को त्याग देना जो की मानव की प्रकृति का एक हिस्सा होती हैं. इसका मतलब एक इंसान ऐसी ज़िन्दगी चुनना जो दूसरों और परमेश्वर के लिए जीया जाता हो. इस मायने में, यीशु की निस्वार्थता की शिक्षण, पापमय और विनाशकारी इच्छाओं को त्याग देना का पुण्य हैं और उसके बजाये परमेश्वर और अपने पडोसी की अच्छाइयों के पीछे बढना होगा.

तो स्वयं-इनकार का पुण्य, यीशु के अनुसार ज्ञान की बातें नहीं हैं. यह सार्वभौमिक स्वयं होने का ना ही एहसास है ना ज्ञान की बात हैं. यह एक व्यक्ति की स्वयं व्यक्तिगत इच्छाओं को सच्चाई से त्याग देना और इसके बदले में परमेश्वर के बताये रास्ते पर चलना.

यह चार्ट इस अंतर को और स्पष्टता से दिखाने में मदद करेगा:

	यीशु	हिन्दू धर्म
निस्वार्थता का स्वभाव	यीशु की निस्वार्थता = वास्तविक निस्वार्थ जीवन व्यतीत करना	हिन्दू निस्वार्थता एक एहसास की हम सब स्वयं हैं
क्यूँ स्वयं की इच्छाओं में बुराई हैं?	स्वयं के इच्छाओं में बुराई इसलिए हैं की वह पापमय है- परमेश्वर के विरूद्ध होता हैं	स्वयं की इच्छाये (व्यक्तिगत) बुरी इसलिए हैं क्यूंकि वह आत्म-सार्वभौमिक (ब्रह्मण) इच्छाये नहीं है
समादान	पश्चाताप, स्वार्थी इच्छाओं का त्याग और परमेश्वर के मार्ग पर चलना	बोध और ज्ञान की आप स्वयं हैं
निस्वार्थता में स्वयं की भूमिका	स्वयं को त्याग कर परमेश्वर के लिए जीना	स्वयं की उस महान स्वयं की खोज

हिन्दू निस्वार्थता वास्तव में एक प्रतिज्ञान हैं और उस महान स्वयं में स्वयं को मजबूत बनाना हैं. यीशु की शिक्षण हैं की स्वयं भ्रष्ट हो गया हैं और उन्मुखीकरण पर आधारित भ्रष्ट (पापी) स्वयं का

जीवन व्यतीत कर रहा हैं, निस्वार्थता हैं की स्वयं की ज़िन्दगी से मुड परमेश्वर के लिए जीवन व्यतीत करना है. इस तुलना में विपरीत की भावना हैं. हिंदू धर्म एक आत्म में निर्णायक [6] स्वयं को खोजने के लिए के माध्यम से निस्वार्थता के लिए चाहता है. इसाई धर्म स्वयं के इनकार के द्वारा निस्वार्थता को सिखाता हैं.

मत्ती १६:२४ तब यीशु ने अपने चेलों से कहाँ, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे और अपना क्रूस उठाये, और मेरे पीछे हो ले".

व्याट रोबिनसन

१. ब्रहदरन्याका उपानिषद १, ४ और १० मेरे शिक्षण के कई उदाहरों में से एक

२. युहन्ना ५:२५-२९; मत्ती २५:३४,४१,४६

३) मत्ती १८:१८: "यदि तेरा हाथ या तेरा पैर तुझे ठोकर खिलाये, तो उसे काटकर फेंक दो; टुंडा या लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इससे भला भला हैं की दो हाथ या दो पाँव रहते हुए तू अनंत आग में डाला जाए."

४) मत्ती २३:२५ "हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम कटोरे और थाली को ऊपर से तो माजते हो परन्तु वे भीतर अंधेर और असंयम से भरे हुए हैं."

५) गलती ५:१७ "क्यूंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता हैं, और यह एक दुसरे के विरोधी हैं.....

६) कथा उपानिषद ४,१

संपादक टिप्पणी: कर्मा टू ग्रेस इस लेख को हिन्दू स्कूल के विचार जिनका अक्सर प्रतिनिधित्व किया जाता हैं उसके प्रमुख दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत करता हैं. हमें मालूम पड़ता हैं की यहाँ अन्य द्वैतवादी और संशोधित द्वैतवादी दृष्टिकोण हैं.